- षष्ठ अध्याय -

- उ प सं हा र -

षष्ठ अध्याय

उपसंहार

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी उपन्यासों में प्रगतिवादी दृष्टिकोण को अपनाकर, कतिपय लेखकों ने समाजवादी यथार्थवाद का यथार्थ चित्रण किया है। यशपाल, राहुल, सांकृत्यायन और रांगेय राघव की परंपरा को नागार्जुनने और भैवरप्रसाद गुप्त जी ने अधिक बल दिया। प्रगतिवादी उपन्यासकारों ने एक ओर नागरीय वातावरण में पूंजीवाद के विभिन्न अत्याचारों का चित्रण किया तो दूसरी ओर ग्रामांचलों में प्रवेश करके जमीदारों और तालुकेदारों की कारवाइयों का पर्दाफाश किया। भैरवप्रसाद गुप्त के 'मशाल', 'गंगमैया', 'सत्ती मैया का चौरा', 'नौजवान', और 'आग और आंसू' प्रगतिवादी उपन्यास कहे जा सकते हैं।

जनवादी भैरवप्रसाद गुप्त जी ने समाज में चेतना प्रदान करके उन्हे प्रोत्साहित करने का प्रयत्न किया। सामान्य जनता की जीती-जागती ज्वलंत समस्याओं का, उनकी परिस्थितियों का, उनकी प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण करके समाज की आशा-निराशा, हर्ष-खेद और आकाक्षांओं को वाणी देने का प्रयत्न किया। नयी समाज व्यवस्था की प्रस्थापना के बीच आनेवाले कठिनाईयों और रूकावटों आदि का उल्लेख भी किया है। इस लघु-शोध-प्रबंध के अंतर्गत सामंतवाद, पूंजीवाद, जमीदार, अवसरवादी नेता, सरकारी यंत्रणा आदि की ओर से उपस्थित की जानेवाली असंख्य आपत्तियां तथा इन वर्गों की प्रतिक्रियावादी कारवाईयों का विरोध करते हुअे सामान्य जनता के जीवन की प्रतिदिन बढ़ता जानेवाली विविध जटिलताओं का चित्रण 'मशाल', 'गंगमैया', 'सतीमैया का चौरा', 'नौजवान', 'आग और आंसू' आदि उपन्यासों में कलात्मकता के साथ किया गया है।

भैरव जी ने परंपराओं को तोडनेवाले, स्वतंत्र मानव की प्रतिष्ठापना करनेवाले, नारी शोषण का प्रतिबंध करनेवाले नये मानव की सृष्टि करने का प्रयत्न किया है, जो प्रशंसनीय लगता है। प्राचीन परंपराओं और रूढियों में पले व्यक्ति अपने संस्कारों के कारण जीवन में प्रगतिशीलता के पथगामी नहीं

बन सकते। नई पीढी में उनसे विद्रोह करने का साहस नही रहता परंतु उनसे संबंध-विच्छेद करके नई पीढी अपना अलग रास्ता बना सकती है, लल्लन इसका अच्छा उदाहरण हो सकता है।

भैरवप्रसाद गुप्तजी ने नागार्जुन की भांति ग्रामीण जीवन की भूमि व्यवस्था में होनेवाले बदलावों के साथ - साथ ग्रामीण जीवन में होनेवाले परिवर्तनों का अपने उपन्यासों का विषय बनाया है।

प्रेमचंद का होरी सूदखोरों, पुलिसदलालों, जमीदारों और कुलीनों के शोषण-चक्र के दबाव में दम तोड देता है। नागार्जुन ने होरी को 'बलचनमा' के रूप में पुनर्जिवित किया जो अब किसी बंधनों को नहीं मानता और शोषकों के विरूध्द भूमिहीन किसानों को संगठित करके घोर संघर्ष करता है। भैरवप्रसाद जी के 'गंगमैया' का मटरू होरी की तीसरी पीढी लगता है। 'बलचनमा' की भांति जमीदारों की हत्या न करके वह जमीदारों को चुनौती देता है और अपने नेतृत्व में वह वर्ग-संघर्ष अनवरत चलाता रहता है।

भैरवजी के आलोच्य उपन्यासों के माध्यम से हमें यह स्पष्ट होता है कि भैरवजी ने ग्रामीणों के हृदय में प्रगतिवादी चेतना फूंकने का काम किया है। भैरवजी की प्रगतिवादी चेतना भारतीय किसानों के अभावों और अत्याचारों ने सिसकती-कराहती आत्माओं से साक्षात्कार कराती है। किसानों की, सर्वहारा मजदूरों की वेदनाओं को हृदयंगम करके भैरवजी ने शोषक वर्ग के प्रति घृणा एवं रोष व्यक्त किया है। लगता है उनके आलोच्य उपन्यास अनुभूति और संवेदना से सम्पृक्त हैं। उन्होंने गांव-गांव घुमकर, दर-दर की ठोकरें खाकर धूप में, खेती-खलिहानों में नंगेबदन घोर परिश्रम किया है। शोषण की चक्की में वे स्वयं पीसे हैं, उन्होंने स्वयं किसानों, खेतिहर मजदूरों, मिल-मजदूरों का संगठन किया है। मजदूर-युनियन के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर हडतालें कराई हैं। वे जेल से होके आये हैं, उन्होंने पुलिस के डंडे खाये हैं। 'मशाल' का नरेन, 'गंगमैया' का मटरू, 'सत्ती मैया का चौरा' का मन्ने, 'आग और आंसू' का चतुरी भैरवप्रसाद गुप्तजी के ही प्रतीक लगते हैं। भैरवप्रसादजी की क्रांतिकारी विचारधारा, उनकी सैध्दांतिक समझ, उनकी संगठनात्मक सूझ-बूझ उनके पात्रों में स्पष्ट लक्षित होती है। अर्थात भैरवजी के पात्र उनकी विचारधारा के वाहक बनकर हमेशा लोककल्याण के लिए जुझते हुअे लक्षित होते हैं।

गुप्तजी ने प्रगतिवादी-चेतना के घेरे में स्त्री-पुरूष संबंधों के माहौल को उभारा है। भैरव जी ने प्रगतिवादी चेतना से संपन्न नये व्यक्ति को जकडनेवाली पुरातन रूढी की जंजीरों को तोड-फेंकने का प्रयास किया है। 'गंगमैया' का मटरू और गोपी, 'आग और आंसू' का लल्लन इन नये व्यक्तियों के रूप में हमारे सामने आते हैं।

सामंती शोषण की जंजीरों में अटकी बांदी जीवन की मर्मांतक पीडा को भी भैरवजीने सहज संवेदना प्रदान की है। तीन पीढियोंसे बंधन मुक्त होने का प्रयास करनेपर जो मुक्त होने में असफल होती है, सामंती गिध्द जिन सतीत्व को गाजर-मूली की भांति नोच-नोचकर खाते हैं। उन नारियों की व्यथा-वेदना को प्रगतिवादी दृष्टिसे पाठकोंके सामने रखकर पाठकोंके मन में नारी-शोषण के प्रति करुणा-जागृतिका काम किया है। उनके 'मशाल', 'गंगामैया', 'सती मैया का चौरा', 'नौजवान', 'आग और आंसू' आदि उपन्यासोंमें नारी की व्यथा वेदनाओं को वाणी देने का काम लेखक ने किया है। भैरवजीकी औपन्यासिक रचनाएँ उनके संपन्न एवं सफल व्यक्तित्व का प्रमाण लगती हैं। प्रगतिवादी-चेतना के साथ-साथ लेखकने यहाँ व्यक्तिगत चेतना की विभिन्न पर्तों को खोलने का भी सफल प्रयत्न किया है।

भैरवप्रसाद गुप्तजी के उपन्यासो में समाज-विकास-परविर्तनों की यथार्थ अभिव्यक्ति, युग की धडकनों का स्वर, मानवीय संबंधों और सामाजिक मूल्यों की गंभीरता, युगीन सत्य की यथार्थ अभिव्यक्ति, सर्वहारा वर्ग की हिमायत, पूंजीवादी-सामंतवादी व्यवस्था के प्रति अंतर्विरोध देखने को मिलता है। लगता है भैरवजी के इन उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तानों को नयी अभिव्यक्ति देने में निश्चित रुप से सफलता मिल सकेगी।

भैरवप्रसाद गुप्ताजीने उपन्यासोंके माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक बदलावों को उभारा है उन्होंने अपने उपन्यासों को सामान्य जन-जीवन से जोडा है। सामाजिक विसंगतियों के साथ एकाकार किया है, सामाजिक विसंगतियों के विरुध्द संघर्ष किया है और शोषण विहीन स्वस्थ समाज की परिकल्पना की है। भैरवजी के आलोच्य उपन्यास प्रेमचंद और नागार्जुन की परंपराओं को आगे बढानेवाली एक दृढ कडी लगते हैं जिसमें मार्क्सवादी चिंतन की पृष्ठभुमिपर प्रगतिवादी चेतना को विकसीत एवं संपन्न बनाने का प्रयत्न किया है।

भैरवप्रसाद गुप्तजीके आलोच्य उपन्यासों में औद्योगिककरण के कारण शहरों में मजदूर संगठन का निर्माण, मालिकों-मजदूरों के हितों का टकराव, मिल मजदूरों की हडताल, पुरानी और नयी पीढी का संघर्ष, पूंजीपतियों की मुनाफाखोरी, सामंति व्यवस्था का जहरीला शोषण,बर्जुआओं की अवसरवादी राजनीति, जांति-पांतियों के आधारपर वर्गीय चेतन का खंडित करने की प्रक्रिया,पुरुष-प्रधान समाज की सडी-गली अनैतिकता, अनैतिक मूल्यों को प्रताडित करनेवाली नवोदित नारी का विद्रोह आदि का चित्रण मिलता है। यशपाल, रांगेय राघव आदि लेखक भी इसी कोटि में आ सकते हैं।

ग्रामीण आंचालिक उपन्यास लेखन में प्रेमचंदीय परंपराको नागार्जुन और भैरवप्रसाद गुप्तजीने पूर्ण रुप में आत्मसात करके ग्रामीण अंचलों का यथार्थ चित्रण किया है। भैरवजीके 'गंगा मैया'

और 'सती मैया का चौरा' मे ग्रामाचलिक यथार्थ का अच्छा चित्रण देखने को मिलता है। आजादी के बाद होनेवाले किसान आंदोलन, उनकी ग्रामीण प्रतिबध्दता को साकार करती है। स्वातंत्रोत्तर कालखंड में ग्रामीण भूमिव्यवस्था में होनेवाले परिवर्तन, कृषिका यांत्रिकीकरण, जमींदारी प्रथा का उन्मुलन, जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के अंतिम क्षणों मे जमींदारों व्दारा किसानोंपर किये जानेवाले अत्याचार, हरित क्रांति का लाभ उठानेवाले स्थानीय नेता, चकबंदी और मेडबंदी के परिणाम स्वरुप नेताओं की अवसरवादिता, सरकारी अमले की कारगुजारी, नारी जीवन की यंत्रणा आदि का यथार्थ चित्रण करके भैरवजीने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के स्वरुप को उजागर किया है। भैरवजी की किसान-मजदूरों के प्रति प्रतिबध्दताही उनके उपन्यासकला की प्रमुख विशेषता दिखायी देती है। भैरवजी के 'गंगा-मैया' का मटरू और पूजन 'सती मैया का चौरा' का मन्ने जन संगठनों के माध्यम से शोषक वर्ग को उध्वस्त करने के लिए भयंकर ज्वालाओंका रुप धारण कर लेते हैं।

भैरवजी की वाणी में जन-जीवन का कौलाहल, क्रान्ति का मुखर स्वर और भारतीय किसानों का आत्मबल लक्षित होता है, परंतु लगता है कि भैरवजी जैसे प्रतिबध्द और जागरुक उपन्यास लेखक की घोर उपेक्षा हो चुकी है। उनकी उपन्यास कला को अपरिपक्व मानकर उनके महत्व को नकारने का असफल प्रयत्न किया है परंतु यहाँ यह लक्षित होता है कि भैरवजीने व्यक्तिवादी आत्माभिव्यक्ति को उपन्यास क्षेत्र से हटाकर साठोत्तरी उपन्यासकारों को विस्तृत सामाजिकता का चित्रण करने का दिशा-दिग्दर्शन किया है।

यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन,भैरवप्रसाद गुप्त और रांगेय राघव की मार्क्सवादी परंपरा को साठोत्तरी कालखंड के उपन्यासकारोंने विविध आयामों में स्वीकारा हुआ लक्षित होता है। भविष्यत के उपन्यासकारों से यह आशा व्यक्त की जा सकती हैं कि वे 'वस्तु' और 'शिल्प' के क्षेत्र में मार्क्सवादी चितंनधारा को और श्रेष्ठता के साथ आगे बढायेंगे, प्रवाहित करेंगे।

भैरवजी के आलोच्य उपन्यासोंमें न केवल मार्क्सवादी वैचारिक आस्था है बल्कि व्यवहारिक दृष्टि से भी उन्होंने मार्क्स-वाद की आत्मसात करने का प्रयास किया है। मार्क्सवाद के प्रति उनकी पूर्ण प्रतिबध्दता लक्षित होती है। इनके उपन्यास पूर्णतः प्रगतिवादी सिध्दांतोंपर खरे उतरे हैं।

भैरवजीने 'आग और आसूं' में लल्लन (छोटे सरकार) के माध्यम से परंपरागत शोषण करनेवाली जमींदारों की नयी शिक्षित पीढी में परिवर्तन दिखाने का बहुत महत्वपूर्ण काम किया है जिससे भविष्यत में शोषण की मात्राकम होने का संकेत भी दिया है। लल्लन (छोटे सरकार) अपने वर्ग की एवं परिवार की स्थिति से परिचित होकर तथा शकुंतला जैसी शिक्षित आधुनिक नारी के संपर्क में आकर नवोदित चेतना से संपृक्त बनकर अपने वर्ग की परंपरओं को प्रगतिवादी दृष्टिकोण से नकारकर नीचे आ

रहा है। इस उपन्यास में टूटती हुई समंति व्यवस्था में मुंदरी (लौंडी) तथा चतुरी जैसे नये व्यक्तित्व के पात्र गुलामी की जंजीरों को उतार फेंकने के लिए तत्पर लक्षित होते हैं। लेखकने यहाँ युग की माँग के मुताबिक नये व्यक्तित्वोंका निर्माण करके उनमें नवोदित प्रगतिवादी चेतना भरकर, नये प्रगतिवादी मानव की सृष्टि करने का प्रयत्न किया हुआ लक्षित होता है।

भैरवप्रसाद गुप्तजी के उपन्यासोंकी समस्याओंका अपना एक अलग और विशिष्ठ महत्व लक्षित होता है। उन्होंने 'मशाल', 'गंगा मैया', 'सती मैया का चौरा', 'नौजवान', 'आग और आसू' आदि उपन्यासों मे वर्ग-संघर्ष की समस्या विधवा समस्या, नारी शोषण की समस्या, बेकारी की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, राजनीतिक समस्या, साम्प्रदायिकता की समस्या, औद्योगिकरण की समस्या, अनुपयोगी शिक्षा प्रणाली एवं छात्र आंदोलन की समस्या, वेठबिगारी की समस्या आदि अनेक राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं को उठाया है। 'मशाल', 'गंगामैया' , 'आग और आसू' की प्रमुख समस्या वर्ग-संघर्ष की समस्या है। 'सती मैया का चौरा' की मुख्य समस्या साम्प्रदायिकता की है, 'नौजवान' की मुख्य समस्या छात्र आंदोलन की है।

भरवजी के आलोच्य उपन्यासों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि लोगों की चेतना उनके अस्तित्व को निर्धारित नहीं करती बल्कि उनका सामाजिक अस्तित्वही लोगों में प्रगतिवादी चेतना को निर्धारित करता है, इन उपन्यासों के आधारपर यह स्पष्ट होता है कि अपने विकास को विशेष स्थिति में पहुँचाकर व्यक्ति की सारी भौतिक शक्तियाँ उत्पादन के संबंधोंसे टकराने लगती है। वह इस स्थिति में उत्पादन उन्हें अपने पावों में पडी बेडियों की तरह लगता है, परिणाम स्वरुप एक क्रांतिकारी युग का निर्माण होता हैं। गुप्तजी के आलोल्य उपन्यासों मे इस अवधारणा की पूर्ण उपलब्धि मिलती है। इन उपन्यासों में भैरवजी का मार्क्सवाद से संयुक्त प्रगतिवादी चिंतन स्पष्ट होता है।

आर्थिक संदर्भो में प्रगतिवादी चेतना को अभिव्यक्त करनेवाले स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासकारों में भैरवजीका विशेष स्थान लक्षित होता है। वे प्रगतिवादी चिंतन से अनुप्रणित लगते हैं इसलिए उनके आलोच्य रचनाओं में सामान्य जनता की व्यथा-कथा विद्यमान है। 'मशाल', 'गंगामैया', 'सती मैया का चौरा' आदि इनके उपन्यासोंमे, साम्यवाद की पृष्ठभुमिपर प्रगतिवादी वर्ग-संघर्ष का चित्रण देखने को मिलता है। उन्होंने समाज के अनेक रुपो में व्यक्त आर्थिक विसंगतियों का निरुपण और समाधान तलाशने का प्रयत्न किया है।

भैरवजीके आलोच्य उपन्यास सत्य के अन्वेषण का एक प्रयास लगते हैं। युगजीवन की परिस्थितियों के परिवर्तन में भैरवजीके इस अन्वेशण ने जीवन के लिए सत्य उद्घाटित करने के लिए

सदैव प्रोत्साहित किया है। भैरवजीने भारतीय ग्रामों की समस्याओं में सबसे अधिक महत्व संगठन शक्ति और वर्ग-वैषम्य को दिया है ऐसा लक्षित होता है। वे मानव की प्रगति चाहते हैं, वे विकासवाद के लिए प्रगतिवाद को अनिवार्य मानते हैं, उनका प्रगतिवाद समाज और जीवन के विकास में सहायक होता हुआ लक्षित होता है। भैरवजी ने आलोच्य उपन्यासों व्दारा ग्रामांचल के अभाव, दीनता, शोषण, दमन, भोलापन आदि का संवेदनक्षम और अनुभूतिजन्य धरातलपर चित्रण किया हुआ लक्षित होता है।

भैरवजी के उपन्यासों में वर्ग-संघर्ष एक रुप में बहुत महत्वपूर्ण आयाम लक्षित होता है। मानव समाज मे वर्ग-संघर्ष सार्वकालिक और सार्वभौमिक रहा है। प्रत्येक देश या समाज में इसके स्वरुप में कुछ भिन्नता रही है। वर्ग-संघर्ष को वर्गीय स्वार्थ के रुप में पहचाना जात है। इसमें हर वर्ग अपने स्वार्थ की बातें सोचता है। हर वर्ग की आर्थिक अवश्यकताएँ, सांस्कृतिक और नैतिक स्वार्थ विधाएँ भिन्न रहती हैं। मार्क्सव्दारा प्रतिपादित यह सिध्दांत आज भी सही कसौटी पर पूरा उतरता है। वर्ग-स्वार्थ से वर्ग-संघर्ष और वर्ग-संघर्ष से वर्ग-युध्द उत्पन्न होता है भैरवजीके आलोच्य उपन्यास इसी कसौटीपर सौ प्रतिशत सही उतरते हैं।

भारतीय वर्ग-संघर्ष का आधार वर्ण व्यवस्था में तलाश किया जा सकता है। उच्च वर्ग को प्राप्त विशिष्ठ अधिकारों के प्रति निम्नवर्ग सद्य फुसफुसाहट करता है। दासप्रथा, वर्गभेद की ही उपज है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न लोग दासों को रखकर उनका शोषण करते हैं। आर्थिक परिस्थितियों समाज में विभिन्न वर्गों और उनके संघर्षों के स्वरूप को निर्धारित करती हैं। वर्ग-संघर्ष की दो अवस्थाएँ होती हैं - प्रथम अवस्थामें ऊपर से शांत दिखायी देनेवाले ज्वालामुखी की तरह पीडित और आभावग्रस्त वर्गोंके मन में क्रोध और घृणा की क्रोधाग्नि उमडती-घुमडती रहती है और व्दितीय में इस अवस्थामें फूटनेवाले ज्वालामुखी की भांति शोषत वर्ग की घृणा, विद्रोह, हडताल, प्रदर्शन, हिंसा आदि में फूट पडती है। भैरवप्रसाद गुप्तजीके 'मशाल', 'गंगामैया', 'नौजवान', 'आग और आंसू', आदि उपन्यासोंमेंउपर्युक्त दोनों अवस्थाएँ उभरी हुई देखने को मिलती हैं।

प्रेमचंदोत्तर काल में विभिन्न वर्गोंने अपने शोषण का डटकर विरोध करना शुरु किया। भैरवजीने अपने उपन्यासों में अपने विचारों को वहन करनेवाले नायक मटरु, नरेन, मन्ने, योगेश, लल्लन आदि का निर्माण करके वर्ग-संघर्ष की लडाई को शुरु कर दिया और इसमें सफलता भी प्राप्त की है।

प्रेमचंदोत्तर काल में नारी ने भी समान अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष का पैत्रा अपनाया। भारतीय नारी ने अपनी अस्मिता को पहचानना शुरु किया परंतु उसके चिंतन में क्रांतिकारी परिवर्तन स्वतंत्रता के पश्च्यात लक्षित होने लगे। नारी के जीवन में विवाह, दहेज, अनमेल विवाह, वैधव्य, बलात्कार, शोषण आदि के रुपमें कई प्रश्नचिन्ह खडे किये इस स्थिति में नारी ने

आत्मनिर्भर बनकर इस पर विजय हासिल करने का प्रयत्न किया। संयुक्त परिवार में नारी का शोषण होने लगा। परिवार के मुखिया की तानाशाही का उसको शिकार होना पडा। रुढी-परंपराओं ने नारी का शोषण शुरु कर दिया। भैरवजीने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी शोषण के विविध आयामों को नजरअंदाज करके नारी की व्यथा के प्रति प्रगतिवादी दृष्टि से आवाज उठाकर युगों-युगोंसे सामंति दासता में सीसकती हुई बंदिनी नारी के रुह में चेतना भरने का प्रयत्न किया। 'मशाल' की सकीना और मदीना, 'गंगामैया' की भाभी, 'सती मैया का चौरा' की कैलासिया, 'नौजवान' की भरत की माँ, 'आग और आंसू' की मुंदरी, सुंदरी, बद्रभीया, महाराजीन आदि ऐसी नारियाँ हैं जिनका युगों-युगों से शोषण होता आया हैं इस शोषणावस्था से नारी जाति में जागृति करके उन्हें ऊपर उठाने के लिए भैरवजीने रुढी विरुध्द आवाज उठानेवाले युवकोंका निर्माण करके विधवा-विवाहबंदी जीवन की व्यथा जैसी समस्याओंका हल ढूंढने का प्रयत्न किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजनीतिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार का बोलबोला शुरु हुआ। पुलिस, जमींदार, महाजन, ठाकुर, पूंजीपति आदि के द्वारा भ्रष्टाचार बढता गया और मजदूरों का, किसानों का शोषण होने लगा इसका वर्णन 'मशाल', 'गंगामैया' , 'सती मैया का चौरा', 'नौजवान', 'आग और आंसू' आदि भैरवजीके उपन्यासों में यथार्थ रुप में देखने को मिलता हैं।

वर्ग-संघर्ष के माध्यम से एक नई जमीन को तलाश ने का काम साहस के साथ भैरवजीने अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है। उन्होंने वर्ग-संघर्ष की भारतीय ओर पाश्चात अवधरणाओं के आलोक में अपने ढंग से अपने उपन्यासों में वर्ग-संघर्ष को उभारने का स्तुत्य प्रयत्न किया हुआ है। भैरवप्रसाद गुप्तजीके उपन्यासें में समसामायिक शोषण विरोधि ताकतों का सशक्त समर्थन मिलता है।

भैरवजीके आलोच्य उपन्यासों मे वर्ग-संघर्ष, नारी-शोषण, भ्रष्टाचार, सर्वहारा शोषण आदिपर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। आज वर्ग-संघर्ष सर्वत्र व्याप्त हो चुका है आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी स्तरोंपर वर्ग-वैषम्य का जहर खौलने लगा है। आज समाज में शोषण की मात्रा बढती जा रही हैं और शोषण के विरुध्द विद्रोह एवं क्रांति भैरवजीके उपन्यासोंका मुख्य उद्देश्य रहा है ऐसा लक्षित होता है। भैरवजीने अपने आसपास के सामज को बडी निकटता और सुक्ष्मता को देखकर उनकी व्यथा-वेदनाओंको वाणी देने का काम किया है। आलोच्य उपन्यासों के माध्यम से यह स्पष्ट ध्वतिन होता है।

स्वातंत्रोत्तर काल में यशपाल, नागार्जुन, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त, राजेंद्र यादव, अमृतराय, मनमथनाथ गुप्त, यज्ञदत्त शर्मा आदि ऐसे महान उपन्यासकार हैं जिन्होंने मार्क्स की प्रेरणा ग्रहण कर प्रगतिवादी दृष्टि से शोषितोंके रुह में प्राण फूंकने का प्रयत्न किया है। भैरवजीने एक नवीन पथ

को अपनाकर भारत के अभावग्रस्त ग्रामों और स्थित दुर्बलल किसानों पर अपनी दृष्टि केंद्रित की है। 'गंगामैया', 'सती मैया का चौरा', 'आग और आंसू' इसके अच्छे उदाहरण हैं, जिनमें भैरवजीने शोषण, अन्याय, अनाचार आदि के प्रति केवल वेदना एवं सहानुभूति प्रकट नहीं की बल्कि तीव्र आक्रोश एवं प्रतिरोध का भी निर्माण किया। भैरवजीकी अवधारणा है कि समाज में जबतक वर्ग-संघर्ष रहेगा तब तक समाज का विकास संभव नहीं होगा वे समाज को संघर्ष विहीन बनाने का प्रयत्न करते हैं और शोषकोंकी नई पीढी में मानवीय बदलाव की स्थितियाँ निर्माण करके साम्यवाद का सपना देखना चाहते हैं। 'आग और आंसू' का लालन उनके इस सपने का अच्छा उदाहरण हो सकता है।

आज मूल्य परिवर्तन तेजीसे बढता जा रहा है समाज में व्याप्त कुंठा, घुटन, एकाकीपन, निरुद्देश्यता, असफलता और निराशा आदि के कारण वर्ग-संघर्ष समाज में तीव्र होता जा रहे है।

व्दितीय विश्व युध्द के बाद ब्रिटीश शासन की जडों का कमजोर होना, जनआंदोलन को रोकने के लिए उनका असर्मथ रहना, सन 1945 के बाद अनेक समाजवादी राष्ट्रों का उदय होना, साम्राज्यवाद के खिलाफ चीन, मलाया, सिंगापूर, इंडोनेशिया आदि में क्रांतियों का छिड जाना, भारत में संघर्ष की सशक्त तैयारियाँ पूरी होना, सन 1946 के जनांदोललन की असफलता के परिणाम स्वरुप भारत में साम्प्रदायिकता का तुफान मचल उठना, साम्प्रदायिकता के नाम पर हिन्दु-मुसलमानों का एक-दूसरे से लडकर मरना, भारतीय समाज का अंतर-बाहय विरोधों में से गुजरना, आधुनिक विकास गति के साथ सामाजिक वर्गो की दूरियों का बढना, उद्योगपतियों, पूंजीपतियों और जमीदारों को सरकारी संरक्षण मिलना, भव्य और अशकासे पीडित समाज में मानव-मूल्यो और स्वस्थ सामाजिक मूल्यों की उपेक्षा होना आदि बातें ततकालिक राजनीतिक पटलपर घटित देखने को मिलती थी। भैरवप्रसाद गुप्तजी के 'मशाल', 'गंगा-मैया', 'सती मैया का चौरा', 'आग और आंसू' आदि उपन्यासों में उपर्युक्त बातों के सबूत जगह-जगह पर मिलते है।

कृषि-औद्योगिकरण से समाज में वर्ग-संघर्ष का बढता जाना, कृषि आधुनिकीकरण योजनाओंसे प्राप्त सिंचाई, खाद, बिज आदि का लाभ पूंजीपतियों एवं जमीदारों द्वारा उठाना, हरित क्रांति के नामपर निर्धनता और संपन्नता के बीच ऊँची-ऊँची दीवारों का खडा रहना, स्वार्थ के नाम पर अमानवीय स्थितियों का उत्पन्न होना, शोषण के नये-नये आयानों का निर्माण होना, भूस्वामियों द्वारा ग्रामीण, किसान, सर्वहरा मजदूरों का शोषण होना, इस संघर्ष को मिटाने के लिए जमीदार किसानों के बीच की दरी को पाटने का काम प्रगतिवादी उपन्यास लेखक भैरवजीके द्वारा किया जाना आदि बातें यहाँ लक्षित होती है। भैरवजीने सहकारी कृषि का प्रयोग 'सती मैया का चौरा' में करके जमीदार किसानों के बीच के संघर्ष को कम करने का एक अच्छा प्रयत्न किया है।

"गंगामैया" में किसान संघटन की जय दिखाकर जमीदारों की अमानवीय स्थिति को परास्त करने का प्रयोग किया है। लगता है कि इसी प्रकार का वर्ग-संघर्ष "मैला आँचल", "अमृत और विष", "अलग-अलग", "वैतरणी", "राग दरबारी", "जल टूटता हुआ", "धरती धन-न-अपना" आदि उपन्यासों में भैरवजी के अनुकरण पर ही अच्छी तरह से विकसित होता हुआ लक्षित होता है।

सांप्रदायिकता की दग्धता से भारतीय जनमानस का कुंठित होना, धर्मांधता के बढने के कारण सांप्रदायिक दंगों का निर्माण होना, सन 1930 में, सन 1940 में, सन 1946 में भारतीय भूमिपर भयंकर सांप्रदायिक दंगों का निर्माण होना, आजादी के बाद जल्दही सांप्रदायिक संघर्ष के दबाव में स्वतंत्र पाकिस्तान की निर्मिति होना, आज भी भारत के अनेक शहरों में साम्प्रदायिक तनावों का लक्षित होना आदि बातों की पृष्ठभूमि पर 6 डिसंबर 1992 का "राममंदिर - बाबरी मसजिद" का मामला देश में स्थित सांप्रदायिक तणावों का एक अच्छा उदाहरण लगता है। इस साम्प्रदायिकता की समस्या को वाणी देने का भैरवप्रसाद गुप्तजी ने अपने उपन्यास "सत्ती मैया का चौरा" में किया है। इस समस्या का प्रगतिवादी दृष्टि से हल ढूंढने का प्रयत्न भी किया। यशपाल का "झूठा सच" 1959, मन्मथनाथ गुप्तजी के "रंगमंच", "अपराजिता" 1960, सच्चिदानंद "धुमकेतु" का "माटी की महक" 1969, मनमोहन सहगल का "कितने दोस्त कितने दुश्मन" 1970, तमस 1973, राही मासुम रझा का "आंधा गांव", प्रणवकुमार बंदोपाध्याय का "खबर" 1978, कृष्ण बलदेव वैद का "गुजरा हुआ जमाना" 1980, इन उपन्यासों के साथ - साथ रामानंद सागर का "और इन्सान मर गया", कृष्णचंद्र का "हम वहशी है", और "पेशावर एक्सप्रेस" आदि उपन्यासों में सांप्रदायिकता की समस्या के दर्शन होते हैं। यशपाल का "झूठा सच" ये सारे उपन्यास "सत्ती मैया का चौरा" की अगली कडियाँ महसूस होते हैं।

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास लेखकों ने व्यक्ति चेतना की दिशा में निरंतर होनेवाले परिवर्तनों का मूल्यांकन चित्रित किया है। भैरवप्रसाद गुप्तजी के आलोच्य उपन्यासों में यह स्थिति देखने को मिलती है।

भैरवजी ने अपने उपन्यासों में राजनीतिक संघर्ष को भी उभारा है। "सत्ती मैया का चौरा" के सभापति त्रिलोकीनाथ के माध्यम से उन्होंने राजनीतिक संघर्ष को उठाया है। आज की राजनीति राजप्रबंध की सीमाओं को लांघकर समाज, धर्म, व्यक्ति और उसके परिवेश के चारों तरफ फैलती जा रही है। यही बातें भैरवजी ने "सत्ती मैया का चौरा" के माध्यम से स्पष्ट की है ऐसा लक्षित होता है।

हिन्दी के "ज्वालामुखी", "त्यागपत्र," "बगुला के पंख", "मुक्तिपथ," निशिकांत," "रतीनाथ की चाची" आदि उपन्यासों में विधवाओं की स्थिति एवं गतिपर गहराई से प्रकाश डाला है। आज परिवर्तित

सामाजिक परिस्थिति के कारण वैधव्य की स्थिति में थोडीसी शिथिलता महसूस होने लगी है परंतु सामाजिक दबाव के कारण इस स्थिति में अधिक परिवर्तन लक्षित नहीं हो रहे हैं। भैरवप्रसाद गुप्तजी ने विधवा-विधुर विवाह संपन्न कराकर वैधव्य की समस्या का समाधान तलाशने का प्रयत्न प्रगतिवादी दृष्टिकोण के साथ किया है। उन्होंने रूढी परंपराओं से जर्जरित एवं उज्जड सामाजिक जीवन की ओर भी प्रगतिवादी दृष्टि से सोचकर उसकी धज्जियाँ उडाने का प्रयत्न किया है।

आधुनिक शिक्षा के प्रसार से विश्वविद्यालयीन उच्चशिक्षा प्राप्त असंख्य युवक-युवतियाँ नौकरी की तलाश में घुमते रहते हैं। कुछ युवकों को केवल शिफारिश के बलपर नौकरियाँ मिलती हैं। दिन-ब-दिन शिक्षित युवकों में बढती बेरोजगारी का विक्राल रूप भारतीय समाज पर अपना आतंक जमा रहा है। बेकारी की समस्या के कारण समाज में अशांति, अस्थिरता, असंतोष फैलता जा रहा है। भैरवप्रसाद गुप्तजी ने "सत्ती मैया का चौरा" और "नौजवान" में बेकारी की समस्या का सूक्ष्मता के साथ चित्रण किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्र विभाजन, तज्यन्य सांप्रदायिक दंगे, मारकाट, लुटमार, आगजनी, हत्याकांड, बलात्कार आदि हृदयविदारक दृश्य, राजनीतिक आयामों के सशक्त प्रमाण मिलते हैं। गुप्तजी ने इस साम्प्रदायिकता के साथ-साथ "सत्ती मैया का चौरा" नामक उपन्यास में पुलिस विभाग में फैली अराजकता, पुलिसोंद्वारा गरीबों का शोषण आदि का चित्रण प्रस्तुत किया है। पुलिस माहौल में फैले भ्रष्टाचार पर प्रगतिवादी दृष्टि से प्रकाश डाला है। भारतीयों की धार्मिक अंधश्रध्दाओं पर भी खुलकर सोचने का प्रयत्न किया गया है।

प्रेमचंद जी के बाद शोषित किसान-मजदूर एवं उपेक्षित नारियों में चेतना जागृति करने का काम भैरवप्रसाद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है। भैरवजी ने वर्ग-संघर्ष के विविध आयामों का चित्रण करके शोषण रूपी कलंक के विरूध्द खुली क्रांति का समर्थन किया है। परिणाम स्वरूप शोषित वर्ग के प्रतिनिधि पात्रों ने शोषण के खिलाफ खुले अपनी आवाज को मजबूत किया है। "मशाल" का नरेन, "गंगामैया" का मटरू, "सत्ती मैया का चौरा" का मन्ने, "आग और आंसू" का चतुरी इसके अच्छे उदाहरण हो सकते हैं।

वर्तमान शासन व्यवस्था में असामाजिक तत्वों का बोलबाला होना, वर्तमान शासन व्यवस्था का भ्रष्टाचार एक प्रभावी माध्यम बनना, अर्थव्यवस्था में टूटन शीलता का आना, पुलिसों के अत्याचारों का बढना, निर्बलों के शोषण का तेज बनना, जीवन से संबंधित समस्त समस्याओं का अर्थमुला बनना, देश की आर्थिक स्थिति का ढुलमुल बनना, ग्रामीण जीवन में अत्याचारों का तथा दलगत राजनीति का और

भ्रष्टाचार का बढना, चुनावी नीति के कारण ग्रामांचलिक जीवन में दरारों का उत्पन्न होना आदि का चित्रण भैरव जी ने अपने उपन्यासों में समर्थता के साथ किया है। वर्तमान समाज में व्याप्त वर्ग-विषमता और वर्ग-संघर्ष का भी गहराई से विवेचन किया है। हमें यहाँ स्पष्ट पता चलता है कि युगों-युगों से चले आये हुअे इस संघर्ष में परिवर्तित समाज के साथ-साथ परिवर्तन लक्षित होने लगे हैं। समाज में प्रगतिवादी विचारधारा का फैलाव करना भैरवजी के उपन्यासों का प्रमुख उद्देश्य लक्षित होता है।

मार्क्सवाद के व्यवहारिक, सैध्दांतिक पक्षों के अनुकुल सामाजिक यथार्थ का चित्रण भैरवप्रसाद गुप्त जी ने अपने उपन्यासों में किया है। इनके उपन्यासों में संघर्ष निर्माण की प्रवृत्ति लक्षित होती है। गाँव के महाजन, चतुर बैठकबाज, हिन्दु-मुसलमान, जमीदार-रयत, कांग्रेसी-कम्युनिस्ट आदि सभी गुप्तजी के उपन्यासों की कथा में समाकालित हुअे लक्षित होते हैं। लेखक ने उनके दैनंदिन उपक्रम को गहराई के साथ चित्रांकित किया है। सत्ता के मद से राजनीतिक दलोंद्वारा सत्य का गला घोंटना, सरकारी कर्मचारियों पर दबाव डालकर उन्हें इमानदारी की राह से पथभ्रष्ट करना, अपने दल की सत्ता को सुरक्षित रखने के लिए आस्थावान सामाजिक व्यक्तियों की सेवा में खलल डालना, अपने अनैतिक कृत्यों से सत्य का हनन करके कर्मठ जीवन में कुंठा का निर्माण करना इन सभी तथ्यों का समाकलन भैरवजी के "गंगामैया", "सती मैया का चौरा", "आग और आंसू" आदि उपन्यासों में देखने को मिलता है।

भैरवजी "मशाल" के सैध्दांतिक स्तर से "गंगामैया" में मानवीय स्तरपर उतरते हुअे दिखायी देते हैं और समाजवादी यथार्थ चिंतन में डूब जाते हैं। भैरवजी के उपन्यास आधुनिक जीवन के विविध स्तरों को अभिव्यक्ति देने में अत्यंतिक सफल लक्षित होते हैं। आज के जनमानस के परिवर्तित रूप को मानवीय संबंधों के संदर्भ में उपन्यासकार ने प्रस्तुत किया है। हमें लगता है कि भैरवजी के उपन्यासों में मानव का रूप अब स्थिति न रहकर गति बनता जा रहा है। इस गतिशीलता में लेखक की गहरी अनुभुति और संवेदना का पता चलता है।

भैरवजी ने सामाजिक यथार्थ का चित्रण मार्क्सवादी दृष्टि से जरूर किया है परंतु कहींपर भी मार्क्सवाद का प्रत्यक्ष आरोप उनकी रचनाओं पर दिखायी नहीं पडता कारण उनका मार्क्सवाद भारतीय जनमानस के साथ पूर्ण रूप में एकरूप हो चुका है। उनके उपन्यासों पर सोचते हुए यह स्पष्ट होता है कि सामंतवाद, साम्राज्यवाद तथा महाजनवाद के हथकंडों से दलित जनजीवन के भीतर प्रगतिवादी चेतना से युक्त "नये आदमी" का निर्माण हो रहा है। लेखक ने प्रगतिवादी दृष्टि से इन बातों पर प्रकाश डाला है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय गावों की अवस्थाओं का चित्रण उनके उपन्यासों में लक्षित

होता है। स्वातंत्र्योत्तर युग में भैरवजी ने जमींदारों के सामाजिक, आर्थिक शोषण, दमन और अन्याय का चित्रण करके इन सभी शोषण विधाओं से मुक्ति पाने के लिए सहकारी कृषि का प्रयोग जनता के सामने रखने का प्रयास किया है। वास्तव में सहकारी कृषि विषयक महत्व विशद करनेवाला "सत्ती मैया का चौरा" हिन्दी का शायद प्रथम उपन्यास होगा।

भैरवजी ने आलोच्य उपन्यासों में केवल शोषण के विभिन्न आयाम न दिखाकर, शोषण के विभिन्न आयामों के विरूध्द जनमानस के मन में तीव्र असंतोष के भाव जागृत करने का महत्वपूर्ण काम किया है। "मशाल" में शकूर के नेतृत्व में मिल मजदूरों का असंतोष से जनित हडताल, "गंगमैया" में मटरू के नेतृत्व में जमींदारों के खिलाफ किसानों का संघर्ष आदि इसके अच्छे उदाहरण हैं। भैरवजी ने अपने पात्रों के माध्यम से प्रगतिवादी चरित्रों की सृष्टि करके इन पात्रों के चिंतन में मार्क्सवाद की वैज्ञानिक और सैध्दांतिक प्रणाली को ठूंसा हुआ लक्षित होता है। "सत्ती मैया का चौरा" का मुन्ना इसका अच्छा उदाहरण है, जो मानवतावाद के धरातल पर उतरकर वैज्ञानिक दृष्टि से पंडितजी के प्रश्नों को उत्तर देता है। मुन्ना तर्कबुध्दि और वैज्ञानिकता के सहारे शोषण का खंडन करता है। अर्थात यह खंडन मानवतावाद के धरातल पर लक्षित होता है। भैरवजी के उपन्यासों के मुन्ने और लल्लन दोनों पात्र जमींदारों के वंशज होकर भी परिवर्तित मानवतावादी और प्रगतिवादी चेतना के वाहक लगते हैं।

स्वतंत्रता के बाद नौकरशाही शोषण भारतीय समाज में बना रहा है। नौकरशाही शोषण के स्पष्ट परंतु घृणास्पद यथार्थ चित्रण भैरवप्रसाद गुप्तजी ने किये हैं। भैरवजी के मतानुसार स्वतंत्र भारत के न्याय और रक्षा के पहरेदार भी शोषक और प्रतिक्रियावादी शक्तियों के साथ दांत-काटी-रोटी का संबंध रखते हैं और शोषण मे मालिकों का सहयोगी बन जाते हैं। लेखक के मतानुसार "आज कानून का रास्ता जितना लम्बा है उतनाही पेचिदा है।" भैरवजी ने यह स्पष्ट किया है कि आज की कानून और न्याय की व्यवस्था रूपयों पर आधारित है भाडे के खिलाडियों का खेल लक्षित होता है। न्याय में स्थित टूटनशीलता यहाँ दिखाने का काम लेखकने "आग और आंसू" में किया है।

नौकरशाही की शोषक वृत्ति के कारण स्वतंत्र भारत की विकास योजनाएँ केवल कागजोंपर ही रह चुकी है। भैरवजी ने पंचायत के सेक्रेटरी की भ्रष्ट नीति पर प्रकाश डालने का काम "सत्ती मैया का चौरा" में करके नौकरशाही भ्रष्टाचार का एक सबूत पेश किया है।

भैरवजी ने अपने उपन्यासों में मार्क्सवाद के प्रचार एवं प्रसार के साथ-साथ कांग्रेस की नीतियों की आलोचना भी की है। भैरवजी के मतानुसार कांग्रेस पूंजपतियों की पक्षधर है कांग्रेस के भीतर संगठित होकर वैधानिक संगठनों के द्वारा उसे समाजवादी शक्ति बना सकने का स्वप्न व्यर्थ है। कांग्रेस

की इस नीति के कारण मार्क्सवादी लेखक कांग्रेस को नीचा देखते हैं। लगता है भैरवजी के कम्युनिस्ट पार्टी की नैतिक श्रेष्ठता को प्रतिपादित करने के उद्देश्य से अपने उपन्यासों में अन्य राजनीतिक दलों की आलोचना की हैं। इस दृष्टि से "सती मैया का चौरा" विशेष उल्लेखनीय उपन्यास माना जा सकता है। स्वतंत्र भारत की कांग्रेस और उसके कार्यों की आलोचना करना इस उपन्यास का मुख्य लक्ष प्रतित होता है। जमींदारी उन्मूलन के परिणामस्वरूप पंचायती राज की कल्पना पर मन्ने कडुवी आलोचना करके कांग्रेसी नीति की पोल खोलने का काम करता है।

सन 1942, सन 1947-1948 में भारतीय जनता कांग्रेस के पीछे-पीछे रही परंतु कांग्रेस जनता को खतरनाक मोडों पर कोई नेतृत्व नहीं दे सकी। भैरवजी के मतानुसार स्वतंत्रता संग्राम काल में जनता का नेतृत्व सही पैमानेपर कांग्रेस ने नहीं किया। इतना ही नहीं स्वतंत्रता के बाद भी प्रगतिवादी राजनीतिक शक्ति के रूप में कांग्रेस ने दुर्बलों में चेतना फूंकने का काम भी नहीं किया। स्पष्ट है कि इसी कारण शायद भैरव प्रसाद जी ने कांग्रेस का त्याग किया होगा।

सन 1942 की क्रांति में कम्युनिस्टों के कार्यों को उचित और न्यायसंगत सिध्द करने का प्रयास भैरवजी ने "सती मैया का चौरा" उपन्यास में किया है। मुन्नी स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय सम्मिलित होकर, दो बार जेल की हवा खाकर, सन 1942 के आंदोलन में तीसरी बार पाँच वर्ष की सजा भुगतता है। जेल जीवन के मनन और अध्ययन से गांधीजी के प्रति उसकी आस्था टूट गयी है परिणामतः वह कम्युनिस्ट बनकर जेल से बाहर निकलता है। यहाँ मुन्नी स्वयं भैरवप्रसाद जी लगते हैं जो प्रारंभ में कांग्रेस में थे और फिर कम्युनिस्ट बन गये। कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित मुन्नी साम्यवादी दृष्टिकोण से देश की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है और कम्युनिस्टों का समर्थन करता है।

आधुनिक भारत के स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में यहाँ के शोषित-शोषक संघर्ष के मुख्यतः दो पहलू उभरे हुअे लक्षित हैं। प्रारंभिक पहलू में किसान-मजदूर संघर्ष है जिसका आधार भारतीय कृषी व्यवस्था रहा है। दूसरा पहलू मजदूर-पूंजीपति संघर्ष का है जिसका आधार भारतीय औद्योगिक स्थिति है। भैरवप्रसाद गुप्तजी ने अपने उपन्यासों में संघर्ष के इन दोनों पहलूओं पर भी प्रगतिवादी दृष्टिकोण के साथ विचार किया है। भैरवजी ने "गंगमैया", "सती मैया का चौरा", "आग और आंसू" आदि उपन्यासों में आर्थिक वैषम्य के शिकार, कृषक वर्ग की दयनीय दशा के साथ - साथ सर्वहारा वर्ग को संघर्षमयी प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है। भैरव जी के "मशाल" में मजदूर-मालिक संघर्ष का विस्तृत चित्रण आया है। उनका उपन्यास "नौजवान" पूंजीपति शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ छात्र संघर्ष का एक नया आयाम पाठकों के सामने पेश करता है। भैरव जी ने

अपने आलोच्य उपन्यासों में किसान-मजदूर आदि की आर्थिक दूरावस्था और उनकी संगठन शक्ति की महत्ता कुशलता के साथ चित्रित की है। अनुपयोगी शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ छात्र आंदोलन को दिखाकर शोषण के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। "गंगामैया", "स ती मैया का चौरा", "आग और आंसू" आदि उपन्यासों के चित्रणों के भांति नागार्जुन के "बलचनमा", "बाबा बटेसरनाथ", यशपाल के "दादा कामरेड", "देशद्रोही", "झूठा सच", रामेश्वर शुक्ल "आंचल" का "चढती धूप" राजेंद्र यादव का "उखडे हुओ लोग" इसी कोटि के उपन्यास लगते हैं।

सन 1960 के बाद संघर्ष की समस्याओं ने विविध रूप धारण किए, कृषक आंदोलन, मालिक-मजदूर आंदोलन, नारी मुक्ति आंदोलन, युवा आंदोलन आदि विविधमुखी आंदोलनों ने संघर्षशील बनकर अपने अस्तित्व को स्थिर करने का प्रयत्न किया। भैरवजी का "नौजवान" अनुपयोगी शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का एक अच्छा आयाम प्रस्तुत करता है। विश्वंभरनाथ उपाध्याय का "पक्षधर" 1971, काशिनाथसिंह का "अपना मोर्चा" 1972, शिवप्रसाद सिंह का "गली आगे मुडती है" 1974, गोविंद मिश्र का "लाल-पिली जमीन" 1976, सुदर्शन मजीठिया का "उखडी हुओ आँधी" 1979 आदि इस कोटि के उपन्यास हैं जिसमें छात्रों द्वारा चलाये गये आंदोलन का जिक्र आया है। "कालेज स्ट्रीट के नये मसीहा" और "नई दिशा" आदि में भी इसी भांति युवा शक्ति की सही दिशा, बेकारी के कारण विद्रोह का चित्रण मिलता है। परंतु छात्र आंदोलन पर भैरवजी का उपन्यास "नौजवान" आंदोलनों के विविध आयामों से अपना स्वतंत्र और अलग स्थान रखता है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में हमने भैरवजी के केवल पाँच उपन्यासों को चुनकर भैरवजी की पुष्ट प्रगतिवादी चेतना को साकार करने का प्रयत्न किया है।

भैरवजी के आलोच्य उपन्यासों के पात्रों का विश्व काफी व्यापक लक्षित लगता है। समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि इनके उपन्यासों में प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके उपन्यासों में विभिन्न वर्गोंसे आये हुओ पात्रों के चरित्र का विकास समाज, दर्शन, मनोविज्ञान और सामाजिक रूढियों के आधारपर ही हुआ है। उनके उपन्यासों में आये हुओ पात्र प्रगतिवादी भावनाओं से युक्त लगते हैं। इन पात्रों की आस्था मार्क्सवादी जीवन दर्शन पर टिकती हुओ लक्षित होती है। भैरवजी ने शोषित-पीडित और निम्न वर्गों को अपने उपन्यासों में प्रेमचंद की भांति स्थान नही दिया है बल्कि उनके वर्गप्रतिनिधि पात्र प्रेमचंद जी के वर्ग प्रतिनिधि चरित्र की अपेक्षा वर्गचेतना एवं राजनीतिक गतिविधियों की ओर अधिक जागरूक लक्षित होते हैं। भैरवजी के आलोच्य उपन्यासों से यह स्पष्ट लक्षित होता है कि उनके पात्र शोषण के शिकार न होकर शोषण, अन्याय, अत्याचार का खुलकर विरोध करनेवाले और संगठन शक्ति के माध्यम से अपने विकास मार्ग में आये हुओ रोडों को उध्वस्त करके अगली मंजीलपर सफलता के साथ प्रविष्ट

होने की तडफडाहट करनेवाले हैं इसलिए वे अत्यंतिक जागरूक और विकसनशील लक्षित होते हैं।

भैरवजी के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थता की प्रतिष्ठा देखने को मिलती है। लगता है कि उनके उपन्यास जीवन के बिल्कुल निकट होकर ठोस यथार्थ की भूमिपर खडे हैं। समाज के विभिन्न यथार्थवादी आयामों को उन्होंने अपने उपन्यासों में विस्तृत फलक पर चित्रांकित किया है। भैरवजी की संवेदना और अनुभूति इन उपन्यासों की धरोहर होने के कारण लगता है कि उनके उपन्यास अद्वितीय बन पडे है। सामाजिक यथार्थवाद को उन्होंने स्वस्थ दृष्टिकोण से कसकर एक व्यापक पृष्ठभूमिपर खडा किया है। -हासोन्मुखी शक्तियों को, व्यवधानों को अनावृत्त करके प्रगतिवादी शक्तियों का समर्थन किया है। गुप्तजी ने सामंतवाद, महाजनवाद और साम्राज्यवाद के हथकंडों के खिलाफ निम्नवर्गीय समाज के भीतर प्रगतिवादी चेतना जागृत करने का काम किया है, इसलिए उन्होंने ग्रामांचल का वास्तविक चित्रण करके यथार्थ के -हासोन्मुखी एवं गतिशील दोनों रूपों को कुशलता के साथ समाकालित कर दिया गया है। "गंगमैया", "सत्ती मैया का चौरा" आदि उपन्यास इसके अच्छे उदाहरण हैं।

भैरवजी ने वर्ग-संघर्ष के संदर्भ में उभरी हुई नयी सामाजिक शक्ति के संघर्ष और आस्था को बल देने का प्रयत्न किया है। यहाँ उन्होंने सामाजिक विसंगतियों की पोल खोलने का सफल प्रयत्न किया है। उन्होंने सामंत, जमीदार, पूंजीपति जैसे शोषक कुटिल शोषण नीतियों का तथा उनसे प्रताडित भारतीय ग्रामीण जनता का चित्रण किया है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की शोषक शक्तियों और उनके निर्मम अत्याचारों पर प्रकाश डालने का काम गुप्तजी ने "मशाल", "गंगमैया", "सत्ती मैया का चौरा", "आम और आंसू" में किया है। इन उपन्यासों के माध्यम से गुप्तजी ने स्वतंत्रोत्तर भारत के सामंती जीवन के अनाचार, अत्याचार, उनकी बर्बरता, अनीति आदि को खोलकर रखा है। शोषण का मूल जनता में स्थित अज्ञान और संगठन शक्ति का आभाव में है ऐसा समझकर उन्होंने शोषण को समाप्त करने के लिए शोषित समाज के सामने संगठन शक्ति और संघर्ष का आदर्श प्रस्तुत किया है। "गंगमैया" के मटरू द्वारा किया गया किसनों का संगठन एक आदर्श संगठन है जो मटरू के जेल जाने के बाद भी मटरू के उत्तराधिकारी पूजनद्वारा आगे बढाया जाता है परिणामस्वरूप शोषक शक्ति का विनाश होता है।

भैरवजी का वर्ग संघर्ष समाजवादी यथार्थवादी आधार पीठिकापर खडा है यह भी यहाँ स्पष्ट होता है।

उनके आलोच्य उपन्यासों में जमीदार-किसान, मिल मालिक-मजदूर, शिक्षा व्यवस्था के अधिकारी - छात्र आदि के बीच संघर्ष दिखाकर राष्टीय एकात्मता एवं विश्वबंधुत्व का संदेश "सत्ती मैया का चौरा" उपन्यास के माध्यम से उन्होंने दिया है। उनके उपन्यासों में वर्ण-भेद के आधार पर

सामाजिक विकासोन्मुखी युग विशेष की वर्गीय स्थिति के चित्रण का आग्रह लक्षित होता है।

लगता है भैरवजी के पात्र उनके उद्देश्य की पूर्ति के हेतु अवतरित हुअे हैं। उन्होंने नारी जीवन की समस्याओं के माध्यम से नारी के स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर जीवन का समर्थन किया है। भैरवजी ने नारी की आर्थिक परतंत्रता को नारी की स्वतंत्रता को नारी की स्वतंत्रता के मार्ग का रोडा माना है।

भैरवजी के आलोच्य उपन्यासों से यह स्पष्ट पता चलता है कि उनके पात्र रूढियों के बंधनों को, अन्याय एवं अत्याचार की विषैली जंजीरों को, भ्रष्टाचार और शोषण के कटघरे को तोडकर नये मूल्यों की प्रतिष्ठापना करना चाहते हैं। साथ-ही-साथ अपनी एक नयी संस्कृति और नया जीवन प्रस्थापित करना चाहते हैं। परंपरागत चली आयी हुअी मानसिकता के खिलाफ विद्रोह करके नयी मानसिकता से युक्त नये मानव का निर्माण करना चाहते हैं। मटरू, नरेन, मुन्नी, मन्ने, शकुर, लल्लन, मुंदरी आदि पात्र नये मूल्यों की तलाश में घुमते हुअे लक्षित होते हैं। और नयी मानवता के वाहक लगते हैं। उपर्युक्त पात्र भैरवजी के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की उपज सिध्द हो सकते हैं।

भैरवजी के उपन्यासों पर संकीर्णता का आरोप लगाना उचित नही लगता कारण वैचारिक अनुदारता, सिध्दांत कथन की प्रवृत्ति, राजनीतिक गतिविधियों पर असंतुलित जोर देने से संकीर्णता का आ सकना संभव है परंतु इसी संकीर्णता की ओट में भी एक नये मानव के निर्मिति का उनका प्रयत्न अत्यंतिक प्रशंसनीय हैं इसीके अनुकरणपर ही आगे जाकर दलित चेतना, ग्रामांचलिक चेतना आदि को प्रशस्त मार्ग मिल सका है ऐसा लक्षित होता है। आज वर्ग-संघर्ष सर्वव्याप्त है परंतु जो गहराई भैरवजी के वर्ग-संघर्ष में लक्षित होती है वह अन्य उपन्यासों में उतनी गहराई से नहीं मिलती। इसका कारण यह भी हो सकता है कि भैरवजी ने जो-जो लिखा उसे देखा भी है, अनुभव भी किया है। इसी के कारण भैरवजी के साहित्य में यथार्थवादिता उजागर हो उठी है और वर्णन जिंदा बन बैठा हैं।

लगता है भैरवप्रसाद गुप्त जी ने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से महान मानवतावादी और क्रांतिकारी साहित्यिक परंपरा को विकास के नये स्तरपर पहुँचाया है। सहज मानवीयता को वैज्ञानिक मानवतावाद के शिखर तक ऊपर उठाया है। सामजिक संवेदनाओं को विस्तृत बनाकर सामाजिक यथार्थ और मानवीय भावनाओं के नये-नये आयामों को प्रस्तुत किया है।

समूल क्रांति और आमूलतूल परिवर्तन भैरवजी चाहते हैं। उन्हें मानव की बुध्दि और कर्म पर अटूट विश्वास है। वर्ग-साम्य और संगठन शक्ति का अवाहत करनेवाले भैरवजी के उपन्यास एक अभिनव प्रयोग लगते हैं।

भैरवजी ने स्वतंत्रता के बाद नवनिर्माण का सुनहरा अवसर देखकर ग्रामजीवन का कोना-कोना यथार्थवाद की पृष्ठभूमि पर भैरवजी ने खडा किया और मानव अनुभूतियों को नयी वाणी

देने का प्रयत्न किया। परिणामतः राष्ट्र निर्माण में भैरवजी के उपन्यासों का योगदान स्पष्ट लक्षित होता है। कोलाहल और संघर्षमयी वर्तमान मानवी जीवन को उन्होंने विश्वमानवता और साम्यवाद का संदेश दिया। थोथी बौध्दिकता और सैध्दांतिकता की ओट में भटकती मानवता को भैरवजी ने जीवन का विश्वास और आस्था प्रदान कर दी। विविध वादों के खोखले में भटकी सहज स्वाभाविक प्रेम से लुप्त हुई मानवता को विश्वबंधुत्व का एवं मानव प्रेम का संदशा कर्तव्य बुध्दि से देने का काम भैरवजी ने किया है। भैरवजी के उपन्यासों के नायक उनके विचारों का वहन करते हैं यह भी यहाँ स्पष्ट होता है।

भैरवजी ने यथार्थ के नाम पर न तो कुच्छित और बिभत्स रूपों का चित्रण किया है और न सतही यथार्थ को उसने एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में एक स्वस्थ एवं तटस्थ दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। भैरवजी ने अपने उपन्यासों में संघर्ष को सामाजिक सत्य का चोला पहनाकर सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने -हासोन्मुखी शक्तियों को प्रशस्त करके प्रगतिशील शक्तियों का समर्थन किया है।

भैरव जी के आलोच्य उपन्यासों में जीवन यथार्थ के निरूपण में समाजवादी आदर्श के कई तत्व और गतिमान परिवर्तनशील द्वंद्वात्मक जीवन में प्राप्त संघर्ष को रेखांकित करने की प्रवृत्ति भी स्पष्ट लक्षित होती है। भैरवजी को प्रगतिवाद की सबसे कठिण चुनौति का सामना किसानों की समस्या यानी ग्रामीण अर्थनीति, संस्कृति और सामाजिक ढांचे की प्रकृति को समझाने की समस्या एवं किसानों को शिक्षित और सचेतन करने तथा एक राजनीतिक शक्ति के रूप में क्रियाशील करने की समस्या के रूप में करना है। ग्रामीण समाज में परिवर्तन और प्रगति लाने के लिए एक व्यावहारिक क्रांतिकारी नीति और कार्यशैली भैरव जी ने निश्चित की है, ऐसा लक्षित होता है। इस नीति के अनुरूप उन्होंने किसानों में गैरभाग्यवादी, आत्मविश्वासी और कर्मशील दृष्टिकोण का पुनर्निर्माण किया है। भाग्यवाद से विच्छेद किये बगैर भारतीय किसान ऐतिहासिक परिवर्तन के सचेतनकर्ता नहीं बन सकते ऐसी भैरवजी की धारणा "गंगामैया" "सती मैया का चौरा", 'आग और आंसू' आदि उपन्यासों से स्पष्ट होती है।

भैरवजी की प्रगतिवादी चेतना में लोकमंगल की साधनावस्था के दर्शन होते हैं। भैरवजी ने अपने पात्रों में प्रगतिवादी चेतना को जगाकर, उस चेतना को उचित दिशा देने का प्रयास भी किया है। "गंगामैया" का मटरू, गोपी, पूजन इसके अच्छे उदाहरण लगते हैं। यहाँ प्रगतिवादी चेतना के प्रति गुप्तजी की प्रतिबध्दता सिध्द होती है। भैरवजी की प्रगतिवादी चेतना सामूहिक जीवन की जबरदस्त मांग के रूप में लक्षित होती है। नागार्जुन, रेणु, भैरवप्रसाद गुप्त, राजेंद्र अवस्थी, रामदरश मिश्र और जयसिंह आदि प्रगतिवादी उपन्यासकारों में ऐसी मांगे विरोध - आंदोलन और संघर्ष का रूप धारण कर लेती है।

यह संघर्ष प्रकृति, समाज, रूढिबध्द संस्कारों और व्यवस्था आदि के साथ पनपा हुआ लक्षित होता है।

लगता है कि आज का हिंदी उपन्यास साहित्य प्रगतिवादी चेतना से संपन्न होने लगा है जिससे व्यक्तिवादी उपन्यास साहित्य पीछे पडने लगा है।

ΩΩΩΩΩ

- संदर्भ ग्रंथ सूची -

आलोच्य ग्रंथ :-

1. गुप्त भैरवप्रसाद - मशाल, निलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वि.सं. 1957
2. गुप्त भैरवप्रसाद - गंगामैया, धारा प्रकाशन, इलाहाबाद, तेरहवां सं. 1982
3. गुप्त भैरवप्रसाद - नौजवान, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. 1972
4. गुप्त भैरवप्रसाद - सती मैया का चौरा, निलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. 1959
5. गुप्त भैरवप्रसाद - आग और आँसू, धारा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. 1983

संदर्भ ग्रंथ :-

1. हिन्दी विश्वकोश खण्ड चौथा, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी
2. शर्मा रामविलास - मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1984
3. संपा. डॉ. वर्मा धिरेंद्र, कु. अगरवाल प्रीति - हिन्दी साहित्यकोश
4. डॉ. लोधा अमरसिंह जयराम - प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना, अमर प्रकाशन, अहमदाबाद, प्र.सं. 1982
5. शास्त्री उमेश - हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, देवनागर प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. 1979
6. बर्न्स ए. मिले - व्हाट इज मार्क्सिज्म - कोनकिर्थ मोरिस - डायलेक्टिकल मटारिआलिज्म
7. जोशी पूरनचंद - परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद
8. सिंह नामवर - आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, चतुर्थ सं. 1968
9. डॉ. शर्मा शिवकुमार - हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1966
10. मिश्र शिवकुमार - प्रगतिवाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1966
11. डॉ. पाण्डेय इंदु प्रकाश - हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में जीवन सत्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र.सं. 1979
12. संपा. शुक्ल विद्याधर - भैरवप्रसाद गुप्त व्यक्ति और रचनाकार, प्रभा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. 1988
13. डॉ. चतुर्वेदी अरूणा - गांधी विचारधारा और हिन्दी उपन्यास, कल्पकार प्रकाशन, लखनऊ, प्र.सं. 1983
14. गुप्त भैरवप्रसाद - धरती, धारा प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वि.सं. 1975

15. गुप्त भैरवप्रसाद - अन्तिम अध्याय, धारा प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वि.सं. 1975

16. अम्बिका प्रिया - भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, संतोष प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1988

17. डॉ. सिंह कुवरपाल - हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना, पांडुलीपि प्रकाशन, दिल्ली,प्र.सं. 1976

18. डॉ. 'मेहता' प्रभासचन्द्र - प्रगतिवाद और हिन्दी उपन्यास (सन 1936 से 1960 तक) साहित्य सदन, देहरादून, प्र.सं. 1967

19. डॉ. शर्मा गोपाल कृष्णा - मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, प्र.सं. 1990

20. डॉ. अस्थाना ज्ञान - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,प्र.सं. 1966

21. डॉ. मदान इन्द्रनाथ - आज का हिन्दी उपन्यास और शिल्पविधी, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बिकानेर, प्र.सं. 1971

22. डॉ. यादव सुरेन्द्र प्रताप - स्वातंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण यथार्थ और समाजवादी चेतना, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1992

23. डॉ. जोशी इंदिरा - हिंदी आंचलिक उपन्यास, उद्‌भव और विकास, देवनागर प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. 1985

24. डॉ. कडवे ह.के. - हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 1978

25. डॉ. गुप्त ज्ञानचन्द्र - स्वातंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्रामचेतना, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1974

26. डॉ. नागर विमलशंकर - अनुसंधान के नये सोपान, प्रेरणा प्रकाशन, मुरादाबाद, प्र.सं. 1989

27. डॉ. उपाध्याय मृत्युंजय - हिंदी के आंचलिक उपन्यास, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. 1989

28. डॉ. बांदिवडेकर चन्द्रकान्त - हिन्दी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, (1920 - 1947) कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, प्र.सं. 1969

29. डॉ. गुप्त बालकृष्णा - हिन्दी उपन्यास : सामाजिक संदर्भ, अभिलाषा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 1978

30. अग्रवाल विजयकुमार - स्वातंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामंती जीवन, विक्रम प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1990

31. डॉ. रविन्द्रनाथ एन. - मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1979

32. डॉ. गुप्ता कमला - हिंदी उपन्यासों में सामंतवाद, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1979

पत्रिका :-

1. सम्पा. सिंह नामवर - आलोचना, जनवरी-मार्च 1989, अंक - 88 वर्ष 37

2. सम्पा.डॉ. दुबे चंदुलाल- भारतवाणी, अंक 6 वा

3. दिनांक 3 अप्रैल 1992 का लेखक का पत्र

4. दिनांक 30 अप्रैल 1992 का लेखक का पत्र

5. सम्पा. डॉ. वचन देवकुमार - अनुवाद शोध पत्रिका अंक - 3, वर्ष - 1979

6. सम्पा. डॉ. गोपाल - समीक्षा, जुलाई-सितम्बर - 1981, वर्ष - 15, अंक 2

शोध - प्रबंध :-

1. डॉ. धुमाल वाय.बी. - साठोत्तरी हिन्दी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक तुलनात्मक अध्ययन (1960 - 1980) (अप्रकाशित शोध-प्रबंध) पुणे विश्वविद्यालय, 1985

000